उपांतर

महाकवि अश्वघोष की कृतियों (बुद्धचरित और सौन्दरनन्द) का रीति-सिद्धान्त की दृष्टि से समीक्षण करने के पश्चात् यह कहा जा सकता है कि उनकी कृतियों में रीति-सिद्धान्त के अवयवों का विवेचन अच्छी प्रकार से हुआ है जिसके परिणामस्वरूप उनके महाकाव्यों में विशेष चमत्कार आ सका है ।

इनकी कृतियों का विषय मोक्ष-प्रधान होने के कारण उनके काव्यों में वैदर्भी रीति प्रमुख रूप से उपलब्ध होती है, जो विषय एवं भाव के बिल्कुल अनुरूप है । अन्य रीतियों का विवेचन भी उनकी कृतियों में यत्र-तत्र हुआ है । इनकी कृतियों में युद्ध आदि स्थलों के वर्णन में गौड़ी रीति का प्रयोग हुआ है जिसके कारण उनके काव्यों में विशेष सौन्दर्य पोषित ही रहा है ।

इनके काव्यों का विषय शान्त-प्रधान होने के कारण इनमें माधुर्य गुण भी प्रमुख रूप से पाया जाता है । अन्यत्र अन्य गुणों का विवेचन भी प्रसंगानुरूप है ।

महाकवि अश्वघोष ने अपने महाकाव्यों में अलंकारों का विवेचन भी अच्छी प्रकार से किया है । शब्दालंकारों में से यमक तथा अनुप्रास अलंकार का प्रयोग प्रमुख रूप से किया गया है । इनकी कृतियों में कुछ स्थल ऐसे हैं जहाँ पूरा श्लोक ही दोहरा दिया गया है, तथा कुछ स्थलों पर आधा श्लोक दोहरा दिया गया है । कहीं पर एक ही पद में एक ही शब्द को कई बार दोहरा दिया गया है । कहने का अभिप्राय यह है कि उनकी कृतियों में अनुप्रास के सभी भेदों के उदाहरण उपलब्ध होते हैं । इसके अतिरिक्त अन्य अलंकारों का प्रयोग भी पर्याप्त रूप से उपलब्ध है, जिससे काव्य-भाषा में विशेष सौन्दर्य आ गया है ।

अर्थालंकारों में इन्होंने उपमा, रूपक, दीपक, एकावली आदि अनेक अलंकारों का प्रयोग किया है। इनमें प्रयुक्त अलंकारों को देखने से यह स्पष्ट होता है कि अलंकार काव्य में स्वाभाविक रूप से प्रयुक्त हुए हैं। ये प्रयत्नपूर्वक लादे हुए नहीं है। इनके द्वारा प्रयुक्त मालोपमा, उपमा तथा एकावली आदि अलंकार विशेष महत्त्व रखते हैं, जो काव्य सौन्दर्य में विशेष प्रकार का चमत्कार लाते हैं।

महाकवि अश्वघोष की कृतियों में औचित्य को भी प्रमुख स्थान प्राप्त है। इनके महाकाव्यों में औचित्य के लगभग सभी उदाहरण उपलब्ध होते हैं। इन्होंने गुण, अलंकार और रीतियों का प्रयोग भी अपनी कृतियों में उचित रूप से किया है। क्योंकि इनके काव्यों का विषय शान्त-प्रधान है। यहाँ पर शान्त विषय की प्रधानता होगी, वहाँ पर माधुर्य गुण की प्रधानता होना आवश्यक है। इन्होंने विषयवस्तु के अनुरूप वैदर्भी रीति का प्रमुख रूप से प्रयोग किया है। इन्होंने अपनी कृतियों में दार्शनिक आख्यानों का प्रयोग भी उचित रूप से किया है। इनके महाकाव्यों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इन्होंने भाषा का प्रयोग वक्ता, वाच्य, रस और विषय के अनुरूप किया है। इन्होंने महाकाव्यों में विषयानुरूप सरल एवं सरस भाषा का प्रयोग किया है। युद्ध आदि प्रसंगों के वर्णन में इन्होंने तदनुरूप भाषा का प्रयोग किया है। इस प्रकार इनके काव्यों की भाषा में किसी भी प्रकार का शिथिलता नहीं होने पाई है। इन्होंने अपनी रचनाओं में स्त्रियों के स्वभाव वर्णन को भी सुन्दर एवं अनुरूप भाषा में व्यक्त किया है जिसके परिणामस्वरूप काव्यों में विशेष सौन्दर्य आ सका है।

छन्द का प्रयोग विषयानुरूप एवं भाव के बिल्कुल अनुरूप हुआ है। इन्होंने अनुष्टुप् छन्द का प्रयोग प्रमुख रूप से किया है। अन्य छन्दों का प्रयोग भी प्रसंगानुरूप उपलब्ध है। युद्ध आदि के वर्णन में इन्होंने उपजाति छन्द का प्रयोग किया है। कहने का अभिप्राय यह है कि इनकी कृतियों

में छन्दों का प्रयोग अच्छी प्रकार से हुआ है । इनके द्वारा प्रयुक्त छन्दों के उदाहरणों से यह स्पष्ट होता है कि इनका छन्द प्रयोग स्वाभाविक जान पड़ता है, जिसके कारण इनके काव्यों में मधुरता का अनुभव होता है ।

महाकवि अश्वघोष ने अपनी कृतियों में शब्द-चयन भी अच्छी प्रकार से किया है । इन्होंने कहीं तो विशेषण के कारण शब्द चयन किया है और कई स्थलों पर अनुप्रास, यमक तथा उपमा अलंकार को बढ़ाने के लिए शब्द-चयन किया है । शब्द-चयन की दृष्टि से इनकी कृतियों का समीक्षण करने से यह स्पष्ट होता है कि ये शब्द-चयन में परिपक्व कवि थे । इनके द्वारा किया गया शब्द-चयन इनकी विद्वता को प्रकट करता है । इनकी कृतियों में कोई ऐसे श्लोक नहीं मिलता, जिसमें इन्होंने निरर्थक शब्दों का चयन किया हो । इन्होंने कई स्थलों पर विशेष शब्द का चयन करके अपनी परिपक्व बुद्धि का परिचय दिया है ।

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि महाकवि अश्वघोष की कृतियों में दार्शनिक सिद्धान्त के सभी अवयवों का प्रयोग काव्य के उत्कर्ष तथा सौन्दर्य बढ़ाने के लिए हुआ है । क्योंकि इन्हीं अवयवों के कारण इनके महाकाव्यों में विशेष प्रकार का चमत्कार आ सका है । अपनी कृतियों में विशेष प्रकार का चमत्कार लाना ही महाकवि अश्वघोष का उद्देश्य था । क्योंकि इन्होंने बौद्ध-धर्म के प्रचार एवं प्रसार के लिए ही काव्य लिखे । ताकि अधिक से अधिक जनता इनके काव्यों की ओर आकर्षित हो । इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए इन्होंने बौद्ध-धर्म के नीरस सिद्धान्तों को सरस बना कर उन्हें काव्य रूप दिया ।

= = = = = =

सन्दर्भ-ग्रन्थ-सूची

1. "ओंकार सार संग्रह", अमृतानन्द योगी, वी० कृष्णमाचारी तथा के० रामचन्द्र शर्मा (सम्पा०), मद्रास, अड्यार लायब्रेरी, 1949.

2. "अग्नि पुराण का काव्यशास्त्रीय भाग", राम लाल वर्मा शास्त्री, दिल्ली: नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 1959.

3. "औचित्य विचार चर्चा", क्षेमेन्द्र, राम लाल त्रिपाठी (व्या०), सं०प्र०, वाराणसी, कृष्णदास अकादमी, 1959.

4. "काव्यालंकार", भामह, बटुक नाथ शर्मा तथा बलदेव उपाध्याय (व्या०) सं० द्वि०, वाराणसी, चौखम्भा ओरियन्टालिया, 1976.

5. "काव्यालंकार", रुद्रट, रामदेव शुक्ल शास्त्री (व्या०) सं०प्र०, वाराणसी, चौखम्भा विद्या भवन, 1966.

6. "काव्यालंकार सूत्रवृत्ति", वामन, डा० बेचन झा (व्या०) सं० द्वि, वाराणसी, चौखम्भा विद्याभवन, 1974.

7. "काव्यादर्श", दण्डी, रामचन्द्र मिश्र (व्या०), वाराणसी, चौखम्भा विद्याभवन, 1966।

8. "काव्य प्रकाश", मम्मट, आ० विश्वेश्वर (व्या०), वाराणसी, ज्ञानमण्डल लि०, 1960.

9. "काव्य मीमांसा", राजशेखर, सी०डी० दलाल एवं आर०ए० शास्त्री, (व्या०), बड़ौदा, ओरियण्टल संस्थान, 1934.

10. "काव्य शास्त्र", भगीरथ मिश्र, वाराणसी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, 1980.

11. "काव्य शास्त्र मार्ग दर्शन", कृष्ण कुमार गोस्वामी, दिल्ली, बादलिया प्रिंटिंग प्रेस, 1977.

12. "गोस्वामी तुलसीदास", रामचन्द्र शुक्ल, वाराणसी, आर्य भूषण प्रेस, सं० 2019.

13. "चन्द्रालोक", जयदेव, त्रिलोकी नाथ द्विवेदी (व्या०), वाराणसी, भारतीय विद्या प्रकाशन, 1989.

14. "छन्दोऽलंकार प्रदीप", डा० संसार चन्द, दिल्ली, उमेश प्रकाशन, 1978.

15. "दशरूपक", धनञ्जय, भोला शंकर व्यास (व्या०) सं० सप्तम, वाराणसी, चौखम्भा संस्कृत विद्या भवन, 1974.

16. "ध्वन्यालोक", आनन्दवर्धन, जगन्नाथ पाठक (व्या०) सं० प्र०, (वाराणसी, चौखम्भा संस्कृत संस्थान, सं० 2035.

17. "नवसाहसाङ्कचरित", परिमलगुप्त, जितेन्द्र चन्द्र भारतीय (व्या०), वाराणसी, चौखम्भा विद्या भवन संस्कृत ग्रन्थ माला, 1963.

18. "नाट्यशास्त्र", भरत, बाबू लाल शुक्ल (व्या०) सं० प्र० (वाराणसी, चौखम्भा संस्कृत संस्थान, सं० 2035.

19. "निरुक्त", यास्क, सत्यभूषण योगी (हिन्दी व्या०), दिल्ली, मोती लाल बनारसी दास, 1967.

20. परिमल, अमर कान्त त्रिपाठी निराला, वाराणसी, चौखम्भा विद्याभवन, 1963.

21. "पल्लव", सुमित्रानन्दन पन्त, सं० सप्तम्, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, 1963.

22. "पाश्चात्य काव्यशास्त्र", डा० रामस्वरूप गुप्त, षष्ठ सं० (दिल्ली, अशोक प्रकाशन, 1978.

23. "बुद्धचरित", अश्वघोष, सूर्यनारायण चौधरी (अनु०) सं० द्वि०, बिहार, संस्कृत भवन कठौतिया, 1955.

24. "भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र", डा० वीरेन्द्र कौशिक, सं० द्वि० मेरठ, साहित्य भण्डार, 1963.

25. "भाव प्रकाशनम्", शारदातनय, डा० मदन मोहन अग्रवाल (व्या०), सं० द्वि० (वाराणसी, चौखम्भा विद्याभवन, 1973।

26. "महाकवि अश्वघोष और उनका काव्य", डा० हरिदत्त शास्त्री, कानपुर, साहित्य निकेतन, 1963.

27. "रसगङ्गाधर", जगन्नाथ, बदरीनाथ मिश्र (व्या०) सं० चतुर्थ, वाराणसी, चौखम्भा विद्याभवन, 1983.

28. "रस रंजन", महावीर प्रसाद द्विवेदी (आगरा; साहित्य भण्डार, वि. 2014.

29. "रामायण", वाल्मीकि, गोरखपुर; गीताप्रेस, सं. 2020.

30. "वक्रोक्तिजीवितम्", कुन्तक, राधेश्याम (व्या.) सं. (?)., वाराणसी; चौखम्भा विद्या भवन, 1983.

31. "विक्रमाङ्कदेव चरित", बिल्हण, शेष राज शर्मा (व्या.), वाराणसी; चौखम्भा अमर भारती प्रकाशन, 1983.

32. "वृत्तरत्नाकर", नृसिंह देव शास्त्री, दिल्ली; भारत भारती प्रेस, 1971.

33. "शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धान्त", गोविन्द त्रिगुणायत, दिल्ली: भारतीय साहित्य भण्डार, 1974.

34. "शैली विज्ञान", नगेन्द्र, नई दिल्ली: नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 1973.

35. "शैली विज्ञान", भोलानाथ तिवारी, प्र.सं., दिल्ली; नव प्रभात प्रिंटिंग प्रेस, 1977.

36. "सरस्वती कण्ठाभरणम्", भोज, डा. कामेश्वर नाथ मिश्र (व्या.) वाराणसी; चौखम्भा संस्कृत संस्थान, सं. 2038.

37. "संस्कृत कवि दर्शन", डा. भोला नाथ व्यास, वाराणसी; चौखम्भा विद्या भवन, 1968.

38. "संस्कृत व्याकरण प्रबोध", डा. विजय चन्द्र संसार चन्द्र, जालन्धर; नालम पब्लिकेशंस, 1985.

39. "संस्कृत साहित्य का इतिहास", ए.बी. कीथ, मंगल देव शास्त्री, (अनु.), वाराणसी; मोतीलाल बनारसीदास, 1967.

40. "संस्कृत साहित्य का इतिहास", हरिदत्त मिश्र, प्र.सं., जालन्धर; भारतीय संस्कृत भवन, 1969.

41. "संस्कृत साहित्य का इतिहास", बलदेव उपाध्याय (वाराणसी; शारदा संस्थान, 1973.

42. "संस्कृत साहित्य का इतिहास", डा॰ राम किशोर सिंह, लखनऊ, प्रकाशन केन्द्र, 1973.

43. "संस्कृत साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास", राम जी उपाध्याय, द्वि॰सं॰, इलाहाबाद, नव साहित्य, सं॰ 2027.

44. "संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास", डा॰ कपिल देव द्विवेदी, इलाहाबाद: सरस्वती आफसेट वर्क्स, 1982.

45. "साहित्य दर्पण, विश्वनाथ, डा॰ सत्यव्रत सिंह [व्या॰] सं॰पु॰, वाराणसी, चौखम्भा विद्याभवन, 1957.

46. "साहित्य के सिद्धान्त तथा रूप", भगवती चरण वर्मा, दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 1976.

47. "साहित्यिक निबन्ध", सुषमा रानी गुप्ता, दिल्ली: हिन्दी पुस्तक भवन, 1987.

48. "सुवृत्ततिलकम्, क्षेमेन्द्र, बनारस सिटि, चौखम्भा संस्कृत सीरीज, 1933.

49. "सौन्दरनन्दम्", अश्वघोष, सूर्य नारायण चौधरी [अनु॰] सं॰पु॰ दिल्ली, मोतीलाल बनारसीदास, 1980.

50. "सौन्दरनन्द-साहित्यिक एवं दार्शनिक गवेषणा", नलिन ब्रह्मचारी बृजमोहन पाण्डेय, वाराणसी, चौखम्भा संस्कृत सीरीज, 1972.

लेख –
=======

1. "काव्य में छन्द का प्रयोग", डा॰ ओंकार नाथ माहेश्वरी उद्धृत भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र [सम्पा॰] आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, दिल्ली, भारती साहित्य मन्दिर, 1972.

2. "संस्कृत काव्यशास्त्र में औचित्य सम्प्रदाय", चन्द्र प्रकाश पाठक उद्धृत काव्यशास्त्र-पाश्चात्य और भारतीय काव्य सिद्धान्तों का विवेचन, सम्पा॰ हजारी प्रसाद द्विवेदी [मेरठ, साहित्य भण्डार, 1963.

ENGLISH BOOKS -

1. A History of Sanskrit Literature, S.N. Das Gupta & S.K. De, Calcutta, Granthi Praikrana Press, 1977.

2. "History of Sanskrit Literature", M. Krishna Macharier, New Delhi; Motilal Banarsidass, 1974.

- - - - - -